18 भूगोल को दिल में बसाना

मारिया अथायडे

युवा विद्यार्थी के रूप में मैं किसी ऐसी कहानी की किताब में डूबे रहना पसन्द करती थी जो मुझे विचित्र और रोमांचक स्थानों पर ले जाती, जैसे 'नेवर–नेवर लैण्ड' जहाँ पीटर पैन बड़ा होने से मना कर देता है। मेरा काल्पनिक संसार जोनाथन स्विफ्ट और डैनियल डेफो द्वारा रचे गए तूफानों से तबाह हुए जहाजों और बच गए लोगों की कहानियों से भरा हुआ था। मैं एनिड ब्लाइटन्स की मैजिक फारअवे ट्री से भी उतनी ही मंत्रमुग्ध थी। हाँ, वे सब उन जगहों के बारे में थीं जो कभी भी मेरे स्कूल के एटलस में नहीं रहीं जिसे मैं बड़ी ही निष्ठापूर्वक लिए घूमती थी। क्या यही कारण था जिसकी वजह से मुझे कभी भी भूगोल में मजा नहीं आया?नहीं।

पीछे मुड़ कर देखती हूँ तो यह विषय मुझे अणुओं और कीटाणुओं से ज्यादा लुभा सकता था और इसे लुभाना चाहिए था, पर ऐसा न हो पाने का दोष इसके शिक्षक और पाठ्यपुस्तक को जाता है। लेकिन उन दिनों में हम अपने शिक्षक के बारे में अच्छा सोचते थे और पाठ्यपुस्तक का ध्यान रखते थे क्योंकि उसने हमारी जिन्दगी को आसान बना दिया था। उसने हमारी स्मरण शक्ति को भी बहुत फुर्तीला और तेज बनाए रखा। परीक्षा और कूट प्रश्न प्रतियोगिताओं में जीतने या प्रथम स्थान हासिल करने के लिए वह सबसे अच्छी तकनीक साबित हुई। इस बात से ज्यादा फर्क नहीं पड़ता था कि हम मौसम और जलवायु में भेद नहीं कर पाते थे, न ही हम आलेखों को अंकित करने और ग्लोब को चारों ओर से एक जाल में बाँधने वाली उन खड़ी और आड़ी रेखाओं के आस–पास की जगहों को ढूँढने के बीच के सम्बन्ध को देख पाते थे। कम से कम हमें इतना पता था कि पृथ्वी गोल है न कि चपटी! और जब हमारी कक्षा का मसखरा लड़का भूमध्यरेखा का वर्णन 'पृथ्वी के चारों ओर अफ्रीका से दौड़ रहा अजायबघर के एक शेर' के रूप में करता था तो हम हँसते–हँसते लोटपोट हो जाते थे।

> *यदि भूगोल का उद्देश्य वैश्विक नागरिकों को पोषित करना है तब : क्या हम विद्यार्थियों को ज्ञान के जटिल मार्गों में से ले जा सकते हैं और उन्हें उन तमाम चुनौतियों की समझ प्रदान कर सकते हैं जो आज दुनिया के सामने हैं?*

वर्षों बाद जब मेरे कन्धों पर अध्यापकों के प्रशिक्षण की कठिन जिम्मेदारी आई तो मुझे भूगोल में मेरी कमजोरी का एहसास हुआ। मुझे कुछ करना था और शुरुआत में प्रारम्भ करने का सबसे अच्छा तरीका था प्रश्नों को पूछना। पहला प्रश्न था : 'भूगोल क्या है?' मैंने कई परिभाषाएँ पढ़ीं। विकीपीडिया ने उसका वर्णन इस प्रकार किया है : सब कुछ समाहित करनेवाली ऐसी अध्ययन–विधा जो संसार को – उसकी मानवीय और भौतिक विशेषताओं को – स्थान और स्थिति की समझ के जरिए समझने की कोशिश करती है। दूसरी परिभाषा इस प्रकार से थी : भूगोल पृथ्वी के भूदृश्यों, लोगों, जगहों और पर्यावरणों का अध्ययन है। इसे सरलता से कहा जाए तो भूगोल उस संसार के बारे में है जिसमें हम रहते हैं।

अगला प्रश्न : हम अपने विद्यार्थियों से भूगोल सीख कर क्या हासिल करने की उम्मीद करते हैं जो वे पाठ्यक्रम के अन्य क्षेत्रों से प्राप्त नहीं कर सकते? जीए (1999) के द्वारा दिए गए इसके उत्तर के अनुसार, ''भूगोल का उद्देश्य हमारे चारों ओर के संसार के लिए जागरूक चिन्ता, तथा स्थानीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर सकारात्मक कार्य करने की इच्छा और काबिलियत विकसित करना है।'' एक दूसरा स्रोत जैसे ऑक्सफेम मानता है कि भूगोल युवा लोगों की चिन्ताओं के आधार पर निर्मित होना चाहिए जिससे वे 'वैश्विक नागरिक' बनने में समर्थ हों। और विस्तार में समझाएँ तो – 'वैश्विक नागरिक एक ऐसा व्यक्ति है जो व्यापक संसार की परवाह करता है, जो जानता है कि संसार किस प्रकार से कार्य करता है, जो गरीबी और अन्याय से आक्रोशित होता है और चीजों को बेहतर बनाने के लिए सक्रिय रहता है।' (गार्लेक 2000)

यदि भूगोल का उद्देश्य वैश्विक नागरिकों को पोषित करना है तब : क्या हम विद्यार्थियों को ज्ञान के जटिल मार्गों में से ले जा सकते हैं और उन्हें उन तमाम चुनौतियों की समझ प्रदान कर सकते हैं जो आज दुनिया के सामने हैं? वैश्विक गर्माहट और ग्रीन हाऊस गैसों के हानिकारक उत्सर्जन को कम करने की आवश्यकता, सीमित संसाधनों और ऊर्जा का ज्यादा दीर्घकाल तक चल सकने वाले तरीकों से उपयोग, प्रदूषण को कम करने की आवश्यकता, सामाजिक न्याय को बनाए रखना और पूर्वाग्रह और असमानता को दूर करना। संक्षेप में कहा जाए तो स्कूलों में भूगोल का कार्य है भावी नागरिकों को विश्व के विराट मंच की परिस्थितियों की ठीक–ठीक कल्पना करने में प्रशिक्षित करना और उनके आस–पास के संसार की राजनैतिक और सामाजिक समस्याओं के बारे में विवेकपूर्वक सोचने में मदद करना। इसलिए भूगोल और नागरिकता के बीच की कड़ियाँ सहज और प्रत्यक्ष हैं। क्या हमारे स्कूलों में इस सम्बन्ध को पोषित करना सम्भव है?

एक पर्यावरण त्रासदी ध्यान में आती है। वह 26 जुलाई 2005 का दिन था जब 24 घण्टे तक हुई 994 मिलीमीटर मूसलाधार वर्षा ने मुम्बई को अस्त–व्यस्त कर दिया था और भारत की आर्थिक शक्ति दो दिनों के लिए ''ख़त्म'' हो गई थी। जीवन और धन–सम्पदा का इतना नुकसान हुआ था जिसे बताया नहीं जा सकता। वह 'भयावह मंगलवार' इतिहास में कहीं दफन हो जाएगा लेकिन उससे पहले कोई उत्साही शिक्षक अपनी भूगोल की शिक्षा में उसका इस्तेमाल कर लेगा। रानी कक्षा 9 के अपने विद्यार्थियों के साथ स्थिति को आँकने के लिए उत्सुक थी। वे दत्तचित्त बच्चे थे, बारिश के अपने अनुभवों को बाँटने के लिए उतावले थे। रानी ने इस सवाल को पूछ कर उन्हें धीरे से एक चर्चा में धकेल दिया : क्या बाढ़ भगवान का एक कार्य है?उत्तर पर कक्षा का मत विभाजित था और वे एक आम राय कायम करने में नाकाम रहे। इसलिए उसने उन्हें संसार भर में अलग–अलग स्थानों पर बाढ़ आने के कारणों और उसके प्रभावों पर नजर डालने के लिए कहा। कक्षा ने कठिन परिश्रम से ग्लोब की छान–बीन की और इसी प्रकार की घटनाओं की तलाश में टेढ़े–मेढ़े रास्तों से मिसीसिपी के ऊपर के और नील के नीचे के हिस्सों में गए। पहली बार उन्हें अपने घर के पास मीठी नाम की नदी के बारे में पता चला। वे यह जानकर अचम्भित थे कि उनकी पाठ्यपुस्तकों में इसका कोई जिक्र नहीं था। उन्होंने दैनिक अखबारों को बहुत ध्यान से देखा और अभिलेखों में खोजबीन की और तब जाकर अन्त में उन्होंने तय किया कि भगवान को इन सभी विपत्तियों के लिए दोष–मुक्त किया जाए। लेकिन फिर मुम्बई त्रासदी के लिए किसे दोषी ठहराया जाए? उनकी उँगलियाँ खट से नेताओं, नगर निगम, झुग्गी–झोपड़ी वाले, निर्माण व्यवसायियों और प्रवासी जनसंख्या की ओर उठीं। प्रायः सभी लोग दोषी थे। इस मोड़ पर रानी ने विद्यार्थियों को हर उस दोषी व्यक्ति की भूमिका अदा करने के लिए फुसलाया जिसका उन्होंने नाम लिया था। उनकी प्रतिक्रिया नाटकीय थी और जल्दी ही दोषारोपण का खेल शुरू हो गया। यह सहज ही देखा जा सकता था कि किस प्रकार पर्यावरण के इस मुद्दे ने तीव्र भावनाएँ पैदा कर दी थीं। इस सारे शोरगुल के बीच रानी धैर्यपूर्वक अपने विद्यार्थियों के व्यवहार पर नजर रखे रही। वह इस कोलाहल में क्या हासिल करने की कोशिश कर रही थी?

रानी भूगोल के साथ–साथ नागरिकता सिखाने की कोशिश कर रही थी। उसके पाठ के उद्देश्य थे : (1) हमारे आस–पास के संसार के बारे में एक जागरूक चिन्ता विकसित करना और, (2) दूसरों के अनुभवों में भाग लेने की कला विकसित करना।

यहाँ मुख्य घटक हैं:

- बाढ़ का ज्ञान
- बाढ़ के कारणों की समझ
- समीक्षात्मक सोच
- सामाजिक क्षमताएँ

रानी ने अपनी कक्षा को जगहों, लोगों और मुद्दों की छान–बीन करने के लिए प्रोत्साहित किया था। उन्हें निष्कर्ष निकालने से पहले समीक्षात्मक और तर्कसंगत ढंग से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया गया। अन्त में उसने उन्हें स्थान, अन्तरिक्ष और पर्यावरण के बारे में अपनी भावनाओं की जाँच करने में मदद की। रानी का दृढ़तापूर्वक यह मानना था कि विद्यार्थियों के दिमागों को केवल तथ्यों से भर देना ही काफी नहीं था, वह अपने विद्यार्थियों की अपनी भावनाओं को संभालने, मतभेदों को अहिंसात्मक रूप से हल करने और जिम्मेदारी भरे निर्णय लेने के कौशलों को विकसित करने में उनकी मदद करना चाहती थी। इस स्वाँग ने उन सामाजिक क्षमताओं को प्रकट किया जो भूगोल की इस शिक्षिका के लिए सीखने की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ थीं। रानी एसईएल (सोशल एण्ड इमोशनल लर्निंग) . सामाजिक और भावनात्मक ज्ञान – कहलाने वाली एक पद्धति का इस्तेमाल कर रही थी।

एसईएल क्या है और हमें आजकल के संसार में इस प्रकार की क्षमताओं की आवश्यकता क्यों है?

इसके कई सिद्धान्त हैं लेकिन सबसे अच्छी व्याख्या देते हैं मनोवैज्ञानिक डैनियल गोलमैन जो 1995 में बेशुमार बिकने वाली अपनी किताब ''इमोशनल इंटैलीजेन्स : व्हाई इट कैन मैटर मोर द आईक्यू'' (भावनात्मक बौद्धिकता : यह बुद्धि सूचकांक से अधिक महत्वपूर्ण क्यों हो सकती है) में भावनात्मक बौद्धिकता की वकालत करते हैं। उनके शोध ने यह साबित किया कि उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले लोग उच्च बुद्धि सूचकांक वाले लोगों की तुलना में जीवन में अधिक सफल होते हैं। अन्य शोध अध्ययनों ने दर्शाया कि सामाजिक और भावनात्मक कौशलों को बढ़ावा देने से बच्चों में हिंसा और आक्रामकता में कमी आती है, तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धियाँ, और स्कूलों और कार्यस्थलों में कार्य करने की बेहतर क्षमता हासिल होती है। वे विद्यार्थी, जो अन्य लोगों का सम्मान करते हैं और उनसे सकारात्मक व्यवहार करते हैं और जिनके आदरपूर्ण रवैयों और संवाद के उत्पादक कौशलों को पहचाना और पुरस्कृत किया जाता है, आगे भी इस तरह का व्यवहार करना जारी रखते हैं। जो विद्यार्थी अपने को सुरक्षित और सम्मानित महसूस करते हैं, वे ज्ञान अर्जन करने के लिए अपने–आप को बेहतर रूप से समर्पित कर सकते हैं और शैक्षणिक वातावरणों और व्यापक संसार में उन्नति करने में उन्हें आसानी होती है।

> *अन्य शोध अध्ययनों ने दर्शाया कि सामाजिक और भावनात्मक कौशलों को बढ़ावा देने से बच्चों में हिंसा और आक्रामकता में कमी आती है, तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धियाँ, और स्कूलों और कार्यस्थलों में कार्य करने की बेहतर क्षमता हासिल होती है। वे विद्यार्थी, जो अन्य लोगों का सम्मान करते हैं और उनसे सकारात्मक व्यवहार करते हैं और जिनके आदरपूर्ण रवैयों और संवाद के उत्पादक कौशलों को पहचाना और पुरस्कृत किया जाता है, आगे भी इस तरह का व्यवहार करना जारी रखते हैं।*

क्या भावनात्मक बुद्धि को सिखाया जा सकता है?

भावनाएँ हमारे अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं, और ऐसी बुद्धि हासिल करने के प्रयास में भूगोल का विशेष स्थान है क्योंकि वास्तविक जगहों, वास्तविक लोगों और वास्तविक जीवन के मुद्दों का अध्ययन ही उसका सार है। समसामयिक मुद्दों का समाधान करने के लिए अनेक भौगोलिक अवधारणाएँ विशेष रूप से उपयोगी ज्ञान प्रदान करती हैं। ये हैं स्थान, स्थानिक–विस्तार, पारस्परिक निर्भरता, पर्यावरण के साथ क्रियाकलाप, दूरी, सम्बन्धगत दृष्टिकोण, भौगोलिक कल्पनाएँ, सांस्कृतिक समझ और विविधता। केरेन स्टोन मैकाऊन (1998) के अनुसार ''भावनाएँ हमारे आस–पास के संसार के प्रति हमारी प्रतिक्रियाएँ हैं और वे हमारे विचारों, भावनाओं और क्रियाओं के संयोजन द्वारा पैदा होती हैं।'' उदाहरण के लिए स्लेटर (2001) कहती हैं कि 'नागरिकों को भूगोल और भौगोलिक समझ की जरूरत होती है।' वे मानती हैं कि भूगोल का पूरा सरोकार इसी से है कि हमारे परिवेश के प्रति हमारा दृष्टिकोण क्या है और उसमें हम भौगोलिक और राजनैतिक दृष्टि से जागरूक नागरिकों की तरह कैसे रहते हैं।

संसार सिकुड़ रहा है जबकि कॉर्बन उत्सर्जनों में वृद्धि हो रही है। गूगल के नक्शों ने बहुत पहले मेरे घिसे–पिटे एटलस की जगह ले ली और मैंने भूगोल को दिल में बसा लिया है। मेरे लिए यह एक ऐसा विषय है जो अपने पहाड़ों, नदियों, मैदानों और मौसमों के अद्भुत सौंदर्य के आगोश में भविष्य को छिपाए हुए है।

मारिया अथायडे *अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, बंगलौर में एजुकेशन टेक्नॉलॉजी एण्ड डिजाइन में परामर्शदाता हैं। वे सैंट ज़ेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन और एसएनडीटी विमन्स यूनिवर्सिटी मुम्बई में 1990 से शिक्षकों को प्रशिक्षित कर रही हैं। वे पूरे देश में शिक्षकों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं। वे भावनात्मक रूप से मानती हैं कि : 'बच्चे हमारे सबसे बेशकीमती प्राकृतिक संसाधन हैं और उन्हें सबसे अच्छे शिक्षक मिलने चाहिए'। उनसे इस* maria@azimpremjifoundation.org *ई–मेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*